Vol. 14
Issue 1&2
151July 2023
ISSN 0975 1254 (PRINT)
ISSN 2249-9180 (ONLINE)
www.shodh.net
A Refereed Research Journal
And a complete Periodical dedicated to
Humanities & Social Science Research
शोध संचयन

उर्फ सैम कहानी की मूल संवेदना

बीज शब्द :

पश्चिम में मध्यवर्गीय समाज ,विदेशी परवरिश का दुष्प्रभाव, विदेशी सभ्यता, कुटुंब का विघटन , संस्कृति में मुक्त बंधनो, विभक्त कुटुम्ब पद्धति, पाश्चात्य का अंधानुकरण, मध्य वर्ग, भोगवादी संस्कृति ।

मृदुला गर्ग का कथा साहित्य बहुमुखी प्रतिभा संपन्न रहा है जिसमें समकालीन जीवन की समस्याओं को लेकर मार्मिक उद्घाटन हुआ है। विशेष रूप से स्वतंत्रता के बाद से व्यक्ति ,समाज के स्तर पर भिन्न-भिन्न बदलाव जो आए हैं उनका प्रसंगानुसार वर्णन उनके कहानियों की विशेषता है। विदेशी सभ्यता, बोलचाल एवं व्यवहार से व्यक्ति सभ्य नहीं बन पाता । वेशभूषा केवल बाहरी सौंदर्य में वृद्धि कराती है, आंतरिक समाधान के लिए अपने वतन की संस्कृति , मर्यादाशील का पालन करने से ही मिलता है। उर्फ सैम यह कहानी भी विदेशी सभ्यता, रहन-सहन एवं भाषा के अनुकरण से व्यक्ति और पारिवारिक दुष्परिणामों को प्रदर्शित करती है ।

*****

प्रो.डॉ. पी .एम.भुमरे
विभागाध्यक्ष,हिंदी विभाग,
एस.एम. बी. पी.के महाविद्यालय,शंकरनगर
तह-बिलोली, जि.-नांदेड
भ्रमणध्वनि - 9881641369
Email&bhumare1984@Gmail.com

उर्फ सैम कहानी की मूल संवेदना

साहित्य को समाज का प्रतिबिंबित रूप कहा जाता है क्योंकि समाज में जो घटित होता है उसी की अभिव्यक्ति साहित्य में होती है । गद्य और पद्य इन दोनों विधाओं में समान रूप से विचार विमर्शों की अभिव्यक्ति होती रही है । तात्पर्य यह है कि साहित्य में वही प्रसंग आते हैं जो सामाजिक, राजनीतिक, आर्थिक और सांस्कृतिक क्षेत्र में जो भी विभिन्न कारणों के प्रभावों से बदलाव आते हैं। उनकी अभिव्यक्ति साहित्यकार करते हैं । परिणाम स्वरूप मृदुला गर्ग जैसे संवेदनशील साहित्यकार अपनी कलम से समाज में आए बदलाव का युगीन बोध कराते हैं। इस दृष्टि से साहित्यकार सचेत रहते हुए समाज और वैश्विक स्तर पर आए बदलाव का वर्णन करते हैं। इस दृष्टि से देखा जाए तो सन 1982 में प्रकाशित 'उर्फ सैम' नामक कहानी संग्रह विविध आयामों का उद्घाटन करता है। समाज और संस्कृति के स्तर पर जो समस्याएं पिछले कुछ सालों से उभरकर मूल्यों-मान्यताओं को तहस-नहस कर रही हैं। आधुनिकता के साथ ही नई समस्याओं का उदय भी सामाजिक क्षेत्र में हो रहा है। जिसका वैयक्तिक और पारिवारिक रिश्तों पर भी दुष्प्रभाव हो रहे हैं।

'उर्फ सैम' नामक कहानी के नायक सावन प्रताप सिंह है जो अमेरिका में पढ़ाई करने गए हैं। कहानी का प्रारंभ होता है सावन प्रताप सिंह के अमेरिका से छुट्टी मनाने हेतु हिंदुस्तान में अर्थात अपने वतन वापस लौटेने से । जब से वह अमेरिका की संस्कृति में जाकर बसे हैं तब से उनके अनुभव कटु रहे हैं परंतु विदेशी संस्कृति में पले एवं वहां बसने के कारण सावन प्रताप सिंह में भी वैचारिक बदलाव आते हैं । पिछले 20 सालों से विदेशो की मुक्त संस्कृति के परिवेश से उनमें भी दूसरों के प्रति सोचने-समझने का नजरिया बदल जाता है। जैसे ही वह 20 साल बाद भारत वापस आते हैं वह हमेशा भारतीयों को और अपने रिश्तेदारों को नीचा दिखाने की कोशिश करते रहते हैं। साथ ही अमेरिका के सस्ते माल को इकट्ठा करके अपने रिश्तेदारों में रोब जताने की उनकी प्रवृत्ति रहती है। इतना ही नहीं अपने वतन में बनी चीजों के प्रति जो प्रेम है वह घृणा में बदल जाता है। सावन प्रताप सिंह पूरी तरह से विदेशी संस्कृति में घुल मिल जाते हैं । इसका परिणाम यह होता है कि वह अपने देश की भाषा, संस्कृति और पारिवारिक रिश्ते को हमेशा आर्थिक मूल्यों के आधार पर नापतौल करते रहते हैं। सावन प्रताप सिंह को अपने नए देश के प्रति विशेष लगाव हो जाने से अपने वतन की प्रगति देखी नहीं जाती साथ ही वतन के प्रति किसी भी प्रकार का आत्मिक या आध्यात्मिक लगाव नहीं रहा है । विदेशी मूल्यों और संस्कृति के अनुकरण से उनके आचरण में बदलाव आता है। जिसका परिणाम यह भी होता है कि पति-पत्नी के रिश्ते को वह बदनाम करते हैं। विवाहित होकर भी पर स्त्री के साथ लैंगिक संबंध प्रस्थापित करने में गर्व महसूस करते हैं। विदेशो में जाकर केवल पुरुष ही संस्कृति के विघटन में आगे है, ऐसा नही है इसमें स्त्री भी उतनी ही जिम्मेदार है। डॉ.बालकृष्णन कहते हैं कि, "भारतीय स्त्री जितनी स्वतंत्र राजनीतिक एवं आर्थिक क्षेत्र में है उतनी स्वतंत्रता नैतिक क्षेत्र में नहीं है । लेकिन पाश्चात्य प्रभाव और अंतरराष्ट्रीय मेल- मिलाप से नारी जीवन के नैतिक बंधन कुछ ढीले पड़ गए हैं। कभी-कभी अत्यधिक स्वतंत्रता एवं स्वतंत्र चिंतन के कारण आधुनिक नारी के आचरण में अनैतिकता की बू आती है। हमारा समाज कितना भी विकसित एवं आधुनिक क्यों न हो नारी के अवैध कार्य को कभी प्रोत्साहन नहीं देता है"।[1] अमेरिका में अपनी पहचान छुपाने के लिए सावन प्रताप सिंह स्वयं के नाम में बदलाव करने से भी कतराते नहीं है। सावन प्रताप सिंह अमेरिका के संस्कृति का गुणगान गाते हुए अंग्रेजी भाषा की वकालत करते हैं साथ ही अपनी पहचान छुपाने हेतु अमेरिकन सभ्यता और संस्कृति का अंधानुकरण करते हैं।

सावन प्रताप सिंह अपने माता-पिता के साथ भी ठीक से बर्ताव नहीं करते हैं। जिसका परिणाम आगे चलकर यह देखने को मिलता है कि उसके ह्रदय में किसी के प्रति सम्मान की भावना नहीं है। यह विदेशी परिवेश का दुष्प्रभाव भी कहा जा सकता है । मां-बाप से झगड़ा करके 20 साल पहले पढ़ाई करने हेतु अमेरिका में जाकर बस जाता है परंतु कुछ दिनों के बाद पढ़ाई पूरी होते ही उसे एक अच्छे स्त्री की तलाश होती है । जिसे वह अपना साथी बनाना चाहता है। उसके पीछे भी हिंदुस्तानी लड़की के साथ विवाह करने की उसकी स्वार्थ वृत्ति उजागर होती है क्योंकि उसे अमेरिकी परिवेश का खाना-पीना अच्छा नहीं लगता है। इसीलिए वह एक स्त्री के हाथों भोजन बनवाकर खाना चाहता है। इस दृष्टि से एक बीवी की उसे आवश्यकता है परिणाम स्वरुप आशारानी के साथ उसका विवाह तय होता है। विवाहोपरांत फिर अमेरिका में जाकर बस जाते है। इस पर अमेरिकन व्यंग्य करते हुए उसे पूछ ही लेते हैं कि, हर हिंदुस्तानी शादी करने हेतु वतन ही क्यों लौटते है ? तब

सावन प्रताप सिंह द्वारा बड़े शायराना जवाब में कहा जाता है कि, "मेरी जडे वहां है। उनकी जडे वहां है। जड़ों से जडे न मिले तो मिलन कैसा?"[12] यह सावन प्रताप सिंह का जवाब कितना हास्यास्पद लगता है क्योंकि उनके आचरण एवं विचारों में अपने वतन के प्रति किसी भी प्रकार की कद्र या हमदर्दी नहीं है। अगर देश प्रेमी होता तो अपनी भाषा संस्कृति ,मूल्य का संवर्धन करने की वकालत करता। भारतीय मूल्यों को तहस-नहस करने में उसकी भूमिका महत्वपूर्ण रही है साथ ही विदेशों में जाकर अपने संस्कृति को बदनाम करने का दुष्ट कार्य उनके द्वारा होता है। सावन प्रताप सिंह द्वारा अपने वतन में कई स्कूलों ,कॉलेजों में हिंदी भाषा और संस्कृति के विषयों पर कई व्याख्यानों में उसे सम्मानित भी किया गया है। जब वह विदेश में जाकर बस जाता है तब उसके करनी और कथनी में अंतर आता है। अपनी जड़ों से वह कट गया है ,अपनी जड़ों से जुड़ने हेतु हिंदुस्तानी लड़की से शादी करने का कारण वह बता रहे हैं। जैसे वह कहते हैं " मैं तो हिंदुस्तानी खाने को तरस गया । उनका खाना भी कोई खाना है । ना मिर्च मसाला ना घी - तड़का । न बुराई नहीं कर रहा । सेहत के लिए मुफीद है, पर हम ठहरे हिंदुस्तानी, जुबान के गुलाम मुझे बीवी ऐसी चाहिए जो लजीज से लजीज खाना बनाकर खिला सके ।" सावन प्रताप सिंह की दृष्टि से भारतीय स्त्री केवल खाना बनाने तक ही श्रेष्ठ है। उसे एक सम्मानजनक स्थान नहीं देना चाहते । इतना ही नहीं जब उनकी शादी आशारानी से हो जाती है। वह भी अपनी संस्कृति, मूल्य - मर्यादाओं को भूल जाती है। विदेशी संस्कृति में पूरी तरह से घुलमिल जाती है । शुरुआती दौर में हिंदुस्तानी तरीको के साथ श्रृंगार करती है परंतु जैसे ही विदेशों में जाकर बसी है और कुछ दिनों के बाद वहां के परिवेश के साथ समझौता कर लेती है। उस परिवेश के अनुसार स्वयं में परिवर्तन कर लेती है। जैसे "पेजबॉय स्टाइल में बाल कटवा लेना, साथ ही अपने नाम में भी आशारानी की जगह ऐश के रूप में बदलाव करना ,यह एक हिंदुस्तानी की क्षुद्र मनोवृत्ति प्रदर्शित होती है।[3] विदेशी संस्कृति में मुक्त बंधनो का प्रचलन होता है । पारिवारिक या पति-पत्नी के किसी भी प्रकार के बंध नों में वहां पर रहना अनिवार्य नहीं होता। विदेशी फैशन पर डॉ. ममता कालिया कहती है कि, "दैहिक स्वाधीनता के नाम पर पाश्चात्य का अंधानुकरण उन्हें फिर से पराधीनता की तरफ ध केलता है। जो स्त्री सवा मीटर या एक मीटर कपड़ों के वस्त्र पहनती है उसे यह भी तो सोचना है, कि, वह ऐसा किसलिए पहनती है।"[4] इसी के परिणाम स्वरुप भारत में पति-पत्नी का नाता एक पवित्र माना जाता है फिर भी आशारानी उर्फ ऐश के रूप में भारतीय स्त्री विवाह पूर्व लैंगिक संबंधों का समर्थन भी करती है । स्वंय की तंदुरुस्ती पर ध्यान देना ठीक लगता है। परंतु अपने बच्चों एवं परिवार से भी ज्यादा स्वंय पर ध्यान देना कहा उचित है । इतना ही नहीं उसके पोशाक में भी बदलाव आता है। वह पूरी तरह से विदेशी संस्कृति पर हावी हो जाती है । सावन प्रताप सिंह कितनी स्त्रियों के साथ डेट्स पर जा चुके है। पति-पत्नी दोनों को भी यह बुरा नहीं लगता है । अमेरिका से आने के बाद छह हफ्तों में ही अपने वतन में रहकर वह तंग आ जाती है। उसे किसी भी प्रकार के बंधनों में रहना ठीक नहीं लगता। अमेरिका की संस्कृति में, परिवेश में रहने की जो आदत उसे लगी है । उसके कारण भारतीय प्रथा, परंपराएं उसे बोझ लगती है। सावन प्रताप सिंह अमेरिका में माह तीस हजार की कमाई पर फैशन परस्ती का जीवन जीते हैं। खाना - पीना और ऐयाशी करना यही विदेशी संस्कृति का मकसद होता है। दोनों पति-पत्नी हमेशा के लिए हिंदुस्तान नहीं आना चाहते हैं। परंतु समय का पहिया रुकता नहीं है । विकसित देश में समस्याएं भी अजब की होती है या कहे कि, यह समस्याएं सभ्यता के नाम पर विकास की ही देन होती है। हम देखते हैं कि हिंदुस्तान में कुटुंब संस्था आज भी मजबूत है। कुछ मात्रा में इसमें भी बदलाव आए हुए हैं परंतु अपनेपन की भावना तो अभी भी जिंदा है । जिस विदेशी संस्कृति में सावन प्रताप सिंह रहते हैं वहां पर पीपल्स ओल्ड होम नाम की व्यवस्था बनाई गई है। जिसे सुनते ही कहानी के नायक के रोंगटे खड़े हो जाते हैं । इसलिए वृद्ध हो जाने पर एकाकीपन के जीवन से मुक्ति हेतु अपने वतन आने की योजना प्रताप सिंह द्वारा बनाई जाती है । दुर्भाग्य की बात यह है कि, इतनी प्रगति होने के बावजूद भी वहां पर स्थाई रूप से रिश्ते बन नहीं पाते । यह कहना भी आवश्यक है कि एक बार अपनी जड़ों से टूटने पर दोबारा लौटने के रास्ते बंद हो जाते हैं । सावन प्रताप सिंह के बच्चे भी उनका साथ नहीं देते हैं । आर्चि और कैट उनके दो बच्चे जन्म से ही विदेशी संस्कृति में पले और बढे हुए हैं उनका नाम अर्जुन और कविता था। वे पूर्ण रूप से भूल चुके हैं कि दादा - दादी के बारे में उन्हें कुछ भी पता नहीं है । विभक्त कुटुम्ब पद्धति में दादा - दादी के प्रेम से बच्चे वंचित ही रहते हैं। इसके विपरीत प्रत्यक्ष उन्होंने पारिवारिक मूल्यों के गिरते स्तर को देखा है । उनका पूरा परिवार विदेशी संस्कृति , त्योहारों में घुल मिल गया है। विदेशी संस्कृति में कल की चिंता नहीं होती बल्कि वर्तमान में शान- शौकत और अय्याशी

के साथ जीवन जीने की फैशन परस्ती दिखाई देती है। सुख हो या दुख की घटनाओं पर भी उनकी संवेदना म्रतप्राय हो चुकी है । विदेशी संस्कृति, परिवेश में अनेक त्यौहार वहां पर भी मनाए जाते हैं लेकिन अपने त्योहार और विदेशी त्योहारों में जमीन आसमान का अंतर होता है।

विदेशी संस्कृति के अनुकरण का परिणाम दम्पती जीवन पर भी हावी रहा है। सावन प्रताप सिंह की पत्नी आशारानी और उनके दो बच्चे अर्जुन और कविता परिवार के सदस्य है परंतु एक दूसरे से भावात्मक रूप से कटे हुए हैं। उनमें किसी भी प्रकार का अंतर संबंध नहीं है । समाज में वही होता है जिसमें अंतर क्रियान्वयन का घटित हो जाना अत्यावश्यक होता है। जो व्यक्ति ,परिवार और समाज के स्तर पर जुड़ा हुआ है उनकी आत्मिक, सांस्कृतिक उन्नति होती है जो कई समस्याओं से मुक्त करती है। इस दृष्टि से देखा जाए तो विदेशों में पारिवारिक रिश्ते एक दूसरे से भावना के स्तर पर जुड़े ना होने से कई प्रकार की समस्याओं ने वहां पर जन्म लिया है । बच्चों को माता-पिता और समाज से ही सीख मिलती है। संस्कार सिखाने की आवश्यकता नहीं होती वे अनुकरणीय होते हैं। इतना ही नहीं बच्चों के व्यक्तित्व निर्माण में परिवार और समाज का योगदान होता है जिस घर, परिवारों में पति-पत्नी परिवार से ज्यादा बाहरी संस्कृति में अधिक रमते हैं। बाहरी सुख में ही ध्यान देते हैं, उनके आचरण में शुद्धता नहीं होती । वहां के बच्चों की परवरिश भी संतुलित रूप से नहीं होती है । बचपन से ही उनके आचरण पर भ्रष्ट विचारों का प्रभाव हो जाता है । पैसा और आर्थिक विकास के द्वारा भले ही व्यक्ति के जीवन में समृद्धि आई हो परंतु पारिवारिक और सांस्कृतिक मूल्य टूट चुके हैं। इस कहानी के पति-पत्नी के रिश्ते में भी केवल दिखावा है । वह एक दूसरे की भावनाओं से जुड़े हुए नहीं है । एक दूसरे के पास समय ही नहीं है कि, अपने परिवार, बच्चों पर ध्यान दें। दूसरे लोग हमें अच्छा कहे ,दूसरों को तंदुरुस्त दिखाने की कोशिश हमेशा होती रहती है। इस कहानी की नायिका ऐश उर्फ आशारानी विदेशी संस्कृति के अनुकरण को ही आदर्श मानती है। विदेशी संस्कृति का अंधानुकरण करती हुई इसी प्रकार का वह बर्ताव भी करती है। जैसे कि ,वह बच्चों को डिब्बे का दूध पिलाने में ही गौरव महसूस करती है । हृदय में वात्सल्य प्रेम का अभाव है जिससे बच्चे ममता भरे स्पर्श से वंचित रहते हैं। अर्थात विदेशी परिवारो में बच्चों की तरफ किसी भी प्रकार का ध्यान न देने से अनेक सामाजिक और स्वास्थ्य विषयक समस्याएं निर्माण हो रही है। पाश्चात्य सभ्यता ने स्त्री के नैतिक मूल्यों को दूषित किया है । जैसे, "नारी का अपने शरीर की नुमाइश करना ,अर्धनग्न तस्वीर खिंचवाना, सौंदर्य प्रतियोगिताओं में नारियों का शारीरिक प्रदर्शन आदि पश्चिम की भोगवादी संस्कृति ने भारत के मानव मन को कितना दुष्प्रभावित किया है । क्योंकि नैतिकता ,चरित्र तथा सदाचार जैसे शब्दों का हमारी युवा नारी के जीवन में कोई स्थान नहीं रह गया है।"[5] कहा जाता है कि जैसा हम बोते हैं वैसा ही फल पाते हैं । हमारे बच्चों पर बचपन से विभक्त कुटुम्ब की व्यवस्था, एकाकीपन और स्वतंत्र विचारों के संस्कार होते रहेंगे तो वृद्ध आश्रमों की संख्या में वृद्धि होना ही तय है। जिसका डर सावन प्रताप सिंह को लगता है । इस डर से वह हमेशा के लिए हिन्दुस्तान लौटना चाहते हैं परंतु दुर्भाग्य यह भी है कि विदेशी संस्कृति एवं अनुकरण से वे इतना जुड़े हुए हैं कि वतन में रहने वाले रिश्तेदारों के प्रति किसी भी प्रकार की संवेदना उनमें नहीं है । परिणाम यह होता है कि वृद्धावस्था में अपने रिश्तेदार भी मुंह मोड़ लेते हैं।

सावन प्रताप सिंह बूढ़े होने के पहले वतन लौटना चाहते हैं । दो भाई एक बहन और बच्चों के साथ बुढ़ापे के दिन गुजारना चाहते हैं । अपने वतन जाने की योजना बनाते हैं वैसे ही बड़े भाई पवन कुमार ने उन्हें पत्र लिखकर बताते है। पिताजी से मिली जमीन पर उन्होंने घर बनवाया है । परंतु 20 साल के बाद हिंदुस्तान में गांव के शहर बनते देखे हैं। गांव और शहरों में जमीनों के दाम आसमान छू रहे हैं। बढती महंगाई ने लोगों को मार डाला है । जहां पर सावन प्रताप सिंह के पिताजी की जमीन थी, एक जमाने में वहां पर जंगल थे परंतु आज चारों ओर बड़े-बड़े बंगले खड़े हैं। कहीं पर भी खाली जगह नहीं है जो भी है उनके दामों में बढ़ोतरी हुई है । मध्य वर्ग घर बनाने हेतु जमीन खरीद नहीं सकता। जैसे ही सावन प्रताप सिंह ने यह जाना कि अपने पास उतने पैसे नहीं है तो उन्हें बुढ़ापा और भारी लग जाता है। जो अपने वतन में घर बनाकर रहने की योजना बनाई थी वह पल में टूट जाती है। अमेरिका में रहने वाले लोग बाहरी रूप से जितने भी सधन दिखते हैं उतने ही अंदर से कर्ज और किस्तों में दबे रहते हैं । सावन प्रताप सिंह के पास किसी भी प्रकार की विरासत नहीं है। उनकी हालत भी आर्थिक संकट से निरंतर जूझने की रही हैं। होशियार उसे कहते हैं जो अपनी सुरक्षा का इंतजाम पहले से ही करें। इस दृष्टि से सावन प्रताप सिंह एक असफल व्यक्ति है । पश्चिम में मध्यवर्गीय समाज में संस्कृति का केवल दिखावा और नकली प्रदर्शन होता रहता है । वह जड़ों से कटे हुए लोग

हैं। उसी की तरह सावन प्रताप भी विदेशों में जाकर अपने जड़ों से कट जाता है। सावन प्रताप सिंह की पढ़ाई दिल्ली में ही हुई थी, इंजीनियरिंग की शिक्षा प्राप्त होते ही घर वालों के विरोध में अमेरिका भाग कर पढ़ाई करता है। अमेरिका जाकर सभी प्रकार के काम उसने किए हैं । इतना ही नहीं जी तोड़ मेहनत करने के बाद भी वह मध्य वर्ग से कभी ऊपर नहीं उठ पाता है। जीवन भर सुविधा भोगी साधनों के पीछे लग जाने का परिणाम यह होता है कि अंत में विवश होकर जीना पड़ता है। अपने देश में लौटने की कसक उसे कहीं का रहने नहीं देती । इसी कारण वह अपनों को अपने गरीब स्थिति का एहसास नहीं होने देना चाहता है । उनके मां के द्वारा यह कहा जाता है कि "इतना ढेर सारा रुपया कमा लिया है यहां आकर बिजनेस करो"।6 इतना कहते ही सावन प्रताप सिंह लज्जा से सिर झुका लेते हैं । इतने वर्षों तक विदेशों में रहकर एक घर भी खरीद न सकने का दुख उसे असहनीय हो जाता है। वह कहते हैं कि उसके पास नहीं है । मेरे पास भी नहीं है अपना मकान न हो तो क्यों लौट कर आएगा कोई"। ऐसा कहकर वे टाल देते हैं । परंतु असलियत छुपाने से छुपती नहीं है । तात्पर्य यह है कि, विदेशों में रहकर सावन प्रताप सिंह जड़ों से उखड़े हुए महसूस करते है। ऐसी द्विधा स्थिति में वह अटका हुआ है वह विदेश में रहना भी चाहते हैं परंतु उसे संस्कृति और परिवेश में स्वयं को अकेला और बौना महसूस भी करते हैं । ऐसी स्थिति के लिए वे ही जिम्मेदार है । भौतिक संस्कृति के अनुकरण ने उनके जीवन को खोखला बना दिया है। लाखों में खेलने की बात करने वाले सावन प्रताप सिंह विवश होकर निध ंन का जीवन जीने मजबूर हो जाते हैं । साथ ही कई समस्याओं से छुटकारा पाने हेतु अपने वतन में मकान बनवाना चाहते हैं । यह उनकी विदेशो से वापसी उनके मानसिक परिताप को दर्शाने वाली है। इस कहानी के पात्रों से यही संदेश मिलता है कि, किसी भी देश में रहने के बावजूद अपने वतन, मिट्टी एवं संस्कृति से जुड़े रहने का कार्य कभी नहीं त्यागना चाहिए।

संदर्भ सूची

1.नारी अस्तित्व की पहचान-बालकृष्ण डॉ.सुधा पृष्ठ-18 संस्करण- 2016

2.प्रतिनिधि कहानियां-मृदुला गर्ग, पृष्ठ-79 किताब घर प्रकाशन नई दिल्ली - 2017

3.प्रतिनिधि कहानियां- मृदुला गर्ग, पृष्ठ- 81,किताब घर प्रकाशन नई दिल्ली -2017

4.ममता कालिया मेरे साक्षात्कार लिपिका से बातचीत पृष्ठ-92 संस्करण-2019

5.भारतीय नारी का पश्चिमीकरण - सयाल शांति कुमार पृष्ठ - 29 संस्करण-2020

6.प्रतिनिधि कहानियां - मृदुला गर्ग, पृष्ठ- 80, किताब घर प्रकाशन नई दिल्ली-2017

.....पृष्ठ 57 का शेष

संदर्भः

1.अली, असदुल्ला. जॉन एलियाः दर्द और जुनून का कवि. लाहौरः फिरोजसन पब्लिशर्स, 2008.

2.एलिया, जॉन. शायद. कराचीः डेनियल पब्लिशर्स, 1993.

3.एलिया, जॉन. यानी. कराचीः डेनियल पब्लिशर्स, 2003.

4.जलिल, रुखशांदा. विलीन परदाः जॉन एलिया की साहित्यिक जीवनी. नई दिल्लीः ऑक्सफोर्ड यूनिवर्सिटी प्रेस, 2015.

5.परवीन, सैयद. ष्जॉन एलियाः आधुनिक उर्दू साहित्य का विद्रोही कवि.ष दक्षिण एशियाई अध्ययन पत्रिका, खंड 28, संख्या 4, 2018, पृष्ठ 45ख62.

6.रजा, फर्रुख. उर्दू कविता में अस्तित्ववादः जॉन एलिया के काम का विश्लेषण. इस्लामाबादः राष्ट्रीय विश्वविद्यालय प्रेस, 2012.

7.सिद्धीकी, फहद. ष्जॉन एलिया का आधुनिक उर्दू कविता पर प्रभाव.ष पाकिस्तान साहित्य समीक्षा, खंड 35, संख्या 2, 2020, पृष्ठ 80ख102.

8.सूफी, तबस्सुम. जॉन एलिया का अंधेरा प्रतिभा. द फ्राइडे टाइम्स, 15 अगस्त 2016.

9.जुबैर, अहमद. उर्दू कविता में अस्तित्ववादीः जॉन एलिया के प्रभाव को युवा संस्कृति पर समझना. कराचीः राइटर्स फोरम, 2019.

10.अब्बास, शफीक. गजल और आधुनिकताः 20वीं सदी में उर्दू कविता का परिवर्तन. लाहौरः संग-ए-मील पब्लिकेशंस, 2011.

11.अहमद, जिया. अस्तित्व का उदासीः जॉन एलिया और निराशा की सौंदर्यशास्त्र. कराचीः ऑक्सफोर्ड यूनिवर्सिटी प्रेस, 2020.

12.अनवार, शाजिया. जॉन एलियाः निराशावादी बौद्धिक की आवाज. द हेराल्ड, खंड 41, संख्या 6, 2017, पृष्ठ 58ख63.

13.फारूकी, मेहर. उर्दू साहित्यिक संस्कृतिः उपमहाद्वीप में स्थानीय आधुनिकता. न्यू यॉर्कः पैल्ग्रेव मैकमिलन, 2012.

14.हुसैन, जहरा. जॉन एलिया का निहिलिज्म और आधुनिक पाकिस्तानी मनोविज्ञान.ष उर्दू अध्ययन पत्रिका, खंड 3, संख्या 1, 2019, पृष्ठ 30ख45.

15.रिजवी, सैयद नूमान. संदेहवाद और दुखः जॉन एलिया की कविता का दार्शनिक विश्लेषण. दिल्लीः रुपा पब्लिकेशंस, 2018.

16.शम्सी, कमिला. प्रदर्शन की कविताः राजनीतिक वार्तालाप में जॉन एलिया की भूमिका. इस्लामाबादः शम्सी बुक्स, 2009.

17.सुलतान, रहमान. जॉन एलिया की डिजिटल युग में स्थायी लोकप्रियता. उर्दू टुडे, खंड 12, संख्या 3, 2021, पृष्ठ 22-37.

18.जैदी, खालिद. जॉन एलिया का उपद्रवी प्रतिभाः कविता के माध्यम से परंपरा को चुनौती देना. द डॉन साहित्य समीक्षा, 10 अक्टूबर 2015.

19.जैदी, मेहरिन. बिना शर्त विद्रोहीः जॉन एलिया की विरासत को समझना. कराचीः पैरामाउंट पब्लिशर्स, 2016.